कात्यायनी दुर्गा जी के मन्दिर में आत्मा वीरेश्वर हैं।

१३. आत्मा वीरेश्वराय नमः (मनः) (म० नम्बर सी० के० ७/१५८ में हैं, मु० सिंधिया घाट)। आत्मा वीरेश्वर से पश्चिम सिद्धेश्वरी के मन्दिर में चन्द्रेश्वर हैं।

१४. चन्द्रेश्वराय नमः (हृदय) (म० नं० सी० के० ७/१२४ में हैं, मु० सिद्धेश्वरी)। चन्द्रेश्वर से पूर्व बगल में मणिकर्णिकेश्वर हैं।

१५. मणिकर्णिकेश्वराय नमः (दक्षिण कर) (म० नं० सी० के० ८/१२ में हैं, मु० गढ़वासी टोला)। मणिकर्णिकाघाट से दक्षिण विशालाक्षी के बगल में धर्मेश्वर हैं।

१६. धर्मेश्वरराय नमः (बायाँ हाथ), (म० नं० डी० २/२१ में हैं, मु० मीरघाट)। धर्मेश्वर से पश्चिम कालिका गली में सृष्टि विनायक के बगल में शुक्रेश्वर हैं।

१७. शुक्रेश्वराय नमः (वीर्ये) (म० नं० डी० ८/३० में हैं, मु० कालिंका गली)। शुक्रेश्वर से उत्तर ढुण्ढिराज गली में अविमुक्तेश्वर हैं।

१८. अविमुक्तेश्वराय नमः (दाहिना हाथ) (मु० ढुण्ढिराज गली)।

१९. विश्वेश्वराय नमः (दाहिनाहाथ) (म० नं० सी० के० ३५/१९ में हैं, मु० अन्नपूर्णागली)। विश्वनाथ अङ्ग यात्रा करने वाले नार-नारियों के शरीर में कोई भी अङ्ग-भङ्ग नहीं होता, हड्डी टूटने का भय नहीं होता है। और शरीर स्वस्थ, रोग रहित होता है। इतना ही नहीं पूर्व आचार्य शिवप्रसाद पाण्डेय जी लिखते हैं, जिस व्यक्ति के पहले हड्डी टूटी है उसकी भी हड्डी जुट जाती है। यात्रा करने वाला व्यक्ति इस लोक में सुःख शान्ति प्राप्त करता है। जो यात्री चलने में असमर्थ है वह यात्री महाकालेश्वर महामृत्युञ्जय में उस दिन विश्राम करें। सत्सङ्ग-कीर्तन करके रात्रि में विश्वनाथ जी का स्मरण करते हुए शयन करें। अन्नपूर्णा आदि के दर्शन करने के पश्चात् विश्वनाथ स्वरूपात्मा अङ्ग यात्रा पूर्ण हुई। संकल्प छोड़कर ब्राह्मण को सीधा दक्षिणा देकर साधु-महात्मा को जलपान देकर

काशीखेश भव दूसरा भाग

काशी वैभव दूसरा भाग
कापी नं ११

काशी विश्वनाथ जी का स्मरण करते हुए यात्री अपने अपने घर जाते हैं। कोई-कोई यात्री दूसरे दिन रुद्राभिषेक करते हैं, ब्राह्मण साधु को भोजन कराते हैं; कीर्तन करते हैं। शिवार्पणमस्तु।

काशी में चारधाम यात्रा

प्रत्येक द्वितीया तिथि के दिन यात्रा करनी चाहिए। प्रातः संध्या आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर पूजा की सामग्री गङ्गा जल साथ में लेकर जगन्नाथ तीर्थ, अस्सीघाट में स्नान करके काशी के जगन्नाथ पुरी, अस्सी घाट के दक्षिण बगल के जगन्नाथ मंदिर में छोटे-छोटे सभी मंदिर हैं।

जगन्नाथाय नमः (मु० अस्सी)।

अस्सी से पश्चिम गुरुधाम चौराहा काश्मिरीगंज होते हुए शंकुधारा में गोमती-गोपीतीर्थ विशाल पक्काकुण्ड है। कुण्ड के दक्षिण तट में ऊपर द्वारिकेश्वर के बगल में काशी की द्वारिकापुरी है।

२. द्वारिकानाथाय नमः (म० नं० डी० २२/१६५ में हैं, मु० शंकुधारा)। शंकुधारा से उत्तर कामाक्षा चौराहा होते हुए गुरुद्वारा के पूर्व तट से रामकुण्ड जाने वाली गली में रामेश्वरतीर्थ विशाल पक्का कुण्ड है, कुण्ड के पूर्व बगल में रामेश्वर का मन्दिर है। मन्दिर के पूर्व बगल में सीताशक्ति तीर्थ है।

३. रामेश्वराय नमः (म० नं० डी० ५४/४५ में हैं, मु० रामकुण्ड, लक्सारोड)। रामकुण्ड से बद्रीनारायण जाने का मार्ग इस प्रकार है – रामकुण्ड से गोदौलिया, मैदागिन, मच्छोदरी होते हुए गाय घाट में संहार भैरव के दर्शन कर पूर्व की बद्रीनारायंण गली में यह काशी के बद्रीनारायण महापुरी है, अलकनन्दा बद्रीनारायण तीर्थ नीचे घाट में स्रोत बहता है, ठण्डा-मीठा जल है।

नरनारायणेश्वराय नमः।

४. बद्रीनारायण विष्णवे नमः (मु० बद्रीनारायण गायघाट) काशी से बाहर के चारधाम यात्रा करने से जो फल मिलता है वही फल काशी

के चारधाम यात्रा करने से प्राप्त होता है। काशी खण्ड में वेदव्यास जी लिखते हैं, काशी से बाहर के चार धाम की यात्रा करने से जो पुण्य उपलब्ध होता है उससे दसगुना अधिक काशी के चारो धाम यात्रा करने से पुण्य मिलता है। इस संबंध में काशी दर्शन द्वितीय संस्करण देखिये। हर-हर महादेव।





४२ बयालिस महाशिवलिङ्ग यात्रा

४२ सिद्धशिवलिङ्ग यात्रा मद्धे प्रथम सिद्ध-लिङ्ग-यात्रा प्रारम्भ दाहिं वर्त से करें।

एतेषांसिद्धलिङ्गानां ज्ञास्यन्त्याख्यामपीह न
नामश्रवण तो ऽपीह यलिङ्गानां शुभानने। वृजिनानिक्षयंयन्ति वर्धन्ते पुण्यराशय: ॥३॥
त्वया तु यानि पृष्टानियैरिदंक्षेत्रमुत्तमम्।
तानिलिंगानि वक्ष्यामि मुक्तिंहेतूनिसुन्दरि ॥२८॥
क:काश्यांमोक्षमाप्नोति सत्यं सत्यं पुन: पुन:— पूज्यान्येतानिलिंगानि भक्त्या परमयामुने।
काशीकोशोयमतुलो न प्रकाश्यो यतस्तत:।

(काशीखण्ड अ० ७३)

काशी खण्ड अध्याय ७३ में श्लोक ३२ से ६५ तक है। श्लोक के आधार से यात्रा कठिन होने के कारण सरल करके लिखा है, प्रात: स्नान, संध्या आदि नित्य कर्म से निवृत्त होकर भस्म, रुद्राक्ष का दाना, विल्वपत्र एवं वस्त्र पुष्प, चढ़ाने के लिये रेजगारी पैसा, गङ्गाजल, धूपदीप, नैवेद्य (सीधा) इत्यादि साथ में लेकर केदारेश्वर गौरीतीर्थ में स्नान करके केदारेश्वर के दर्शन, पूजन करने के पश्चात् संकल्प लेकर १४ सिद्ध महालिङ्ग यात्रा प्रारम्भ करें।

१. केदारेश्वराय नम: (म० न० बी० ६/१०२ में हैं, मु० केदारघाट)।

~~१६०~~ २२६

पृ० ४४६

महामृत्युञ्जय के दर्शन करके महाकालेश्वर, धन्वन्तरी अमृतकुण्ड का जल पीकर, पूर्व मच्छोदरी के दक्षिणतट लक्ष्मीनारायण मंदिर में शुभेश्वर हैं, जो लक्ष्मीनारायणेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हैं।

१०. शुभेश्वराय नम: (मच्छोदरी-गायघाट)। मच्छोदरी से पूर्व

~~१६१~~

२२८ पृ० ४४६

केदारजी से उत्तर 'हरहर महादेव शंभो काशी विश्वनाथ गङ्गे' कीर्तन करते हुए, यात्री धीरे-धीरे पंक्तिबद्ध होकर चलते हैं। दशाश्वमेध, मीरघाट होते हुए विशालाक्षी देवीजी के बगल में धर्मेश्वर और धर्मेश्वर तीर्थ धर्मकूप हैं।

२. धर्मेश्वराय नमः (म० नम्बर डी० २/२१ में हैं, मु० मीरघाट)। धर्मेश्वर से पश्चिम ढुण्ढिराज गली में राज राजेश्वर के बगल में अविमुक्तेश्वर हैं।

३. अविमुक्तेश्वराय नमः (मु० ढुण्ढिराज गली)।

४. विश्वेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१९ में हैं, मु० विश्वनाथ जी)। विश्वनाथ जी से पूर्व मणिकर्णिका घाट के ऊपर अभयानन्द आश्रम में मणिकर्णिकेश्वर हैं।

५. मणिकर्णिकेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ८/१२ में हैं, मु० गढ़वासी टोला)। यहाँ से उत्तर सिद्धेश्वरी के मंदिर में चन्द्रेश्वर हैं।

६. चन्द्रेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ७/२४ में हैं, मु० सिद्धेश्वरी)।

७. आत्मावीरेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ७/१५८ में हैं, मु० सिन्धियाघाट) आत्मा वीरेश्वर से उत्तर काल भैरव के दर्शन कर, मृत्युञ्जय चौराहा से महामृत्युञ्जय सड़क में ऋण हरेश्वर के बगल में कृत्तिवासेश्वर हैं।

८. कृत्तिवासेश्वराय नमः (म० नं० के० ४६/२३ में हैं, मु० हरतीरथ) बगल में रत्नेश्वर हैं।

९. रत्नेश्वराय नमः (म० नं० के० ५३/४० में हैं, मु० मध्यमेश्वर) महामृत्युञ्जय के दर्शन करके महाकालेश्वर, धन्वन्तरी अमृतकुण्ड का जल पीकर, पूर्व मच्छोदरी के दक्षिणतट लक्ष्मीनारायण मंदिर में शुभेश्वर हैं, जो लक्ष्मीनारायणेश्वर के नाम से प्रसिद्ध हैं।

१०. शुभेश्वराय नमः (मच्छोदरी-गायघाट)। मच्छोदरी से पूर्व

२८ पृ० ४४६

अरुणादित्य के मंदिर में त्रिलोचन हैं।

११. त्रिलोचनेश्वराय नमः (म० नं० ए० २/८० में हैं, मु० त्रिलोचनघाट)।

१२. आदिमहादेवेश्वराय नमः (म० नं० ए० ३/९२ में हैं, मु० त्रिलोचनघाट) आदिमहादेव से उत्तर मच्छोदरी के पूर्व तट में कामेश्वर गली में हैं।

१३. कामेश्वराय नमः (म० नं० ए० २/९ में हैं, मु० मच्छोदरी) मच्छोदरी पार्क से उत्तर छितवनपुरा मुहल्ले में ओंकारेश्वर हैं।

१४. ओंकारेश्वराय नमः (म० नं० ए० ३३/२३ में हैं, मु० छितवनपरा)। ओंकारेश्वर के दर्शन करने के पश्चात् संकल्प छोड़कर ब्राह्मण को सीधा, दक्षिणा और महात्माओं को जलपान देकर यात्री अपने अपने घर जाते हैं। महासिद्ध लिङ्ग दर्शन यात्रा करने वाले नर-नारियों को इस लोक में सुख सम्पत्ति, आयु, भक्ति उपलब्ध होती है, और ११ बार यात्रा करने वाले यात्रियों को सिद्धि प्राप्त होती है।

काशीदर्शन द्वितीय संस्करण में विस्तार से सप्रमाण दर्शन, पूजन का फल लिखा गया है। प्रथम यात्रा पूर्ण हुई। हरिओम् तत्सत् शिवार्पणमस्तु। हर हर महादेव।

४२ महाशिवलिङ्ग मद्धे १४ महालिङ्ग यात्रा

यह यात्रा प्रत्येक शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि के दिन करनी चाहिए। प्रातः नित्य कर्म से निवृत्त होकर पूजन की सामग्री साथ में लेकर, भारतद्वाजेश्वर के पश्चिम बगल में ब्रह्मेश्वर हैं उनका दर्शन करें।

१. ब्रह्मेश्वराय नमः (म० नं० डी० ३३/६७ में हैं, मु० खालिसपुरा)। दर्शन, पूजा करके दाहिनेवर्त से यात्रा प्रारम्भ करें। ब्रह्मेश्वर से उत्तर अन्नपूर्णा गली में विश्वनाथ जी से सटे हुए पूर्व बगल के मंदिर में तारकेश्वर हैं।

२. तारकेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१७ में हैं, मु० ज्ञानवापी)। तारकेश्वर से सटे हुए पूर्व बगल के शंकरजी के मंदिर में नन्दीकेश्वर हैं,

पृष्ठ ४४
२८८

दूसरे ज्ञानवापी में हैं।

३. नन्दीकेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३५/१६ में हैं, मु० सरस्वती फाटक)। नन्दीश्वर से दक्षिण काली जी के उत्तर बगल के अर्धनारीश्वर के मंदिर में चण्डीश्वर हैं।

४. चण्डीश्वराय नमः (म० नं० डी० ८/२६ में हैं, मु० कालिकागली) चण्डीश्वर से उत्तर खोवाबाजार में ज्ञानविनायक के मन्दिर में लाङ्गलीश्वर हैं।

५. लाङ्गलीश्वराय नमः (म० नं० सी० के० २८/४ में हैं, मु० खोवा बाजार)। लाङ्गलीश्वर से पूर्व सरस्वती फाटक लाहोरी टोला होते हुए, ज्ञानेश्वर के मन्दिर में हैं।

६. ज्ञानेश्वराय नमः (म० नं० डी० १/३२ में हैं, मु० लाहौरी टोला) ज्ञानेश्वर से उत्तर बगल में करुणेश्वर हैं।

७. करुणेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३४/१० में हैं, मु० ललिताघाट) करुणेश्वर के मंदिर में मोक्षद्वारेश्वर हैं।

८. मोक्षद्वारेश्वराय नमः (म० नम्बर सी० के० ३४/१० में हैं, मु० ललिताघाट)। करुणेश्वर से सटे हुए उत्तर बगल में ब्रह्मनाल चौराहा में राम मंदिर है, राम मंदिर से सटे हुए दक्षिण, ऊपर बगल से सीढ़ी चढ़कर ऊपर शंकर जी के मंदिर में स्वर्गद्वारेश्वर हैं।

९. स्वर्गद्वारेश्वराय नमः (म० नम्बर सी० के० १०/१६ में है, मु० ब्रह्मलाल) स्वर्गद्वारेश्वर से पश्चिम बगल में अमृतेश्वर हैं।

१०. अमृतेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३३/२८ में हैं, मु० नीलकण्ठ) नीलकण्ड से पूर्व मणिकर्णिकेश्वर हैं।

११. मणिकर्णिकेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ८/१२ में हैं, मु० गढ़वासी टोला)मणिकर्णिकाघाट से उत्तर मैदागिन चौराहा से उत्तर हरिश्चन्द्र कालेज के बगल में पेट्रोल पम्प के सामने गोरखनाथजी के मठ में वृषेश्वर



हैं।

१२. वृषेश्वराय नमः (म० नं० के० ५८/७८ में है)। वृषेश्वर से उत्तर महाकालेश्वर के बगल में वृध्दकालेश्वर हैं।

१३. बृद्धकालेश्वराय नमः (म० नं० के० ५२/३९ में हैं, मु० मृत्युञ्जय दारानगर)। अमृतकुण्ड के बगल में दक्षेश्वर से पूर्व बगल के शंकर जी के मंदिर में महेश्वर हैं।

१४. महेश्वराय नमः (म० नं० के० ५२/३९ में हैं, मु० दारानगर)।

४२- बयालिस महालिङ्ग मध्ये द्वितीय यात्रापूर्ण हुई। यात्री पूर्ववत् सब कार्य करें। हर हर महादेव।

वेदव्यास जी काशी खण्ड में लिखते हैं कि यह द्वितीय १४ लिङ्ग यात्रा करने वाले व्यक्ति के घर में ऋद्धि सिद्धि स्वतः आ जाती है।

१४ सिद्ध महालिङ्ग यात्रा

बयालिस सिद्धमहालिङ्ग यात्रा मद्धे तृतीय १४ महाशिव लिङ्गयात्रा पूजा की सामग्री साथ में लेकर पूर्ववत् यात्रा प्रारम्भ करें। प्रत्येक शुक्ल प्रतिपदा तिथि के दिन यह यात्रा करनी चाहिए। विश्वनाथ जी से दक्षिण बगल में शुक्रेश्वर हैं।

१- शुक्रेश्वराय नमः (म० नं० डी० ८/३० में हैं, मु० कालिका गली)। शुक्रेश्वर से पश्चिम बाँसफाटक में गजकर्ण विनाक के मंदिर में ईशानेश्वर हैं।

२- ईशानेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० ३७/४३ में हैं, मु० बाँसफाटक)। बाँसफाटक से पूर्व चौक पशुपति मुहल्ला, सिद्धेश्वरी पटनी टोला होते हुए ज्वर हरेश्वर के मंदिर में ज्वर हरेश्वर के दर्शन पूजन करें। स्नान कराया हुआ जल पीने से मियादी बुखार अच्छा होता है।

३- उपशान्तेश्वराय नमः (म० नं० सी० के० २/४ में हैं, मु० पटनीटोला)। पटनीटोला से पश्चिम बुलानाला सप्तसागर होते हुए काशी देवी जी का

पृ० ४५०

दर्शन करके, बगल में ज्येष्ठेश्वर हैं उनका दर्शन करें।

४- ज्येष्ठेश्वराय नमः (म० नं० ६२/१६ में हैं, मु० सप्तसागर)। ज्येष्ठेश्वर के पश्चिम बगल में भूतभैरव के पास में व्याघ्रेश्वर हैं।

५- व्याघ्रेश्वराय नमः (म० नं० के० ६३/१६ में हैं, मु० भूत भैरव)। व्याघ्रेश्वर के बगल में निवासेश्वर हैं।

६- निवासेश्वराय नमः (म० नं० के० ६३/१६ में हैं, मु० भूतभैरव)। भूतभैरव से उत्तर लोहटिया होते हुए बड़े गणेश जी के फाटक के सामने जम्बूकेश्वर हैं।

७- जम्बूकेश्वराय नमः (म० नं० के० ५८/१०१ हैं, मु० बड़े गणेश, लोहटिया) बड़े गणेशजी के दर्शन करके पूर्व बगल में पेट्रोल पम्प के सामने वृषेश्वर के मन्दिर में बृषभध्वजेश्वर हैं।

८- बृषभध्वजेश्वराय नमः (म० नं० के० ५८/७८ में हैं, गोरख नाथ जी के मठ में हैं) यहाँ से पूर्व बगल में मध्यमेश्वर हैं।

९- मध्यमेश्वराय नमः (म० नं० के० ५३/६३ में स्थित हैं, मु० मध्यमेश्वर)। मध्यमेश्वर से उत्तर गोलगड्डा जी० टी० रोड रेलवे लाइन पार करके शैलपुत्री हैं। शैलपुत्री दुर्गाजी के मन्दिर में शैलेश्वर हैं।

१०- शैलेश्वराय नमः (म० नं० ए० ४०/११ में हैं, मु० शैलपुत्री)। शैलपुत्री से पूर्व शैलपुत्री चौराहा, राजघाट बसन्त कालेज होते हुए आदि केशव में वरुणा संगमेश्वर हैं।

११- वरुणा संगमेश्वराय नमः (म० नं० ए० ३७/५१ में हैं, मु० आदिकेशव, बसन्त कालेज)। ज्ञानकेशव, आदि केशव आदि के दर्शन करके आदि केशव से दक्षिण बसन्त कालेज जी० टी० रोड से सड़क की बायीं पटरी से गङ्गा किनारे जाने वाले मार्ग से पुल के नीचे से प्रह्लाद घाट, नया महादेव घाट में अग्नि अखाड़ा के ऊपर श्वर्लिनीश्वर हैं।

१२- श्वर्लिनीश्वराय नमः (म० नं० ए० ११/३० में स्थित हैं, मु०

पृ० ४५१ ~~२६५~~

२६१

सदाशिवं त्रिशूलिनं नमाम्यहं भजाम्यहम्।
सदाशिवैव शान्तिदं सदाशिवैव श्रेयदम्॥
सदाशिवं शुभावनं सुवाञ्छितफलप्रदम्।
नमामि त सदाशिवं भजामि तं सदाशिवम्॥

नया महादेव)। नया महादेव से दक्षिण त्रिलोचनेश्वर की सभा में ब्रह्मेश्वर के बगल में हिरण्यगर्भेश्वर हैं।

१३- हिरण्यगर्भेश्वराय नमः (म० नं० ए० २/८० में हैं, मु० त्रिलोचन)। त्रिलोचनघाट से दक्षिण में लालघाट के ऊपर गौरीशंकर के मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है।

१४- गोप्रेक्षेश्वराय नमः (म० नं० के० २२/३३ में हैं, मु० लाल घाट)।

४२ महासिद्धलिङ्ग यात्रा करने वाले नर-नारियों के अज्ञात पाप नष्ट होते हैं और अज्ञानता भी नष्ट होती है। पुण्य का उदय होता है।

। केदारेश्वर से ... लक्ष्मी कु...
में मण्ड गणेश जी हैं। मण्ड गणेशेश्वराय नमः।

२- मण्ड गणेशाय नमः (म० नं० डी० ५२/३८ में हैं, मु० लक्ष्मीकुण्ड)। मीकुण्ड से उत्तर पिशाचमोचन तीर्थ के पूर्व तट में कपर्दीश्वर के मंदिर णेश जी हैं।

३- कपर्दीश्वर गणेशाय नमः (म० नं० ए० १३/३९ में हैं, मु० चमोचन)। पिशाचमोचन से पूर्व अन्नपूर्णा एवं विश्वनाथ जी के दर्शन धर्मकूप में धर्मेश्वर के मंदिर में धर्मेश्वर गणेश जी हैं उन धर्मेश्वर दूसरा नाम गायत्रीश्वर है। धर्मेश्वर के पास में ब्रह्मगायत्री का जप,

पृ० ४५३

ावं त्रिशूलिनं नमाम्यहं भजाम्यहम् ।
ावैव शान्तिदं सदाशिवैत्र श्रेयदम् ॥
ावं शुभावनं सुवाञ्छितफलप्रदम् ।
त सदाशिवं भजामि तं सदाशिवम् ॥

काशी में ग्यारहरुद्र गणेश यात्रा

त्येक शुक्ल चतुर्थी तिथि के दिन सभी विघ्न को नष्ट करने के लिए सब कार्य सिद्धि के लिए ११ रुद्र गणेश यात्रा करें। प्रातः संध्या नित्य कर्म से निवृत्त होकर दूब, गङ्गाजल, लड्डू, धान का लावा, ल, वस्त्र, बिल्वपत्र, धूप, दीप, नैवेद्य द्रव्य इत्यादि साथ में लेकर घाट में स्नान या मार्जन करके केदारेश्वर के दर्शन पूजा करके गणेश के दर्शन करने के पश्चात् संकल्प लेकर "हर हर महादेव शंभो विश्वनाथ गङ्गे" कीर्तन करते हुए पंक्तिबद्ध होकर यात्री चलते हैं।

केदारेश्वर गणेशाय नमः (म० नं० बी० ६/१०२ में हैं, मु० केदार ।) केदारेश्वर से लक्सारोड लक्ष्मी कुण्ड होते हुए महालक्ष्मी जी के में मण्ड गणेश जी हैं। मण्ड गणेशेश्वराय नमः।

२- मण्ड गणेशाय नमः (म० नं० डी० ५२/३८ में हैं; मु० लक्ष्मीकुण्ड)। लक्ष्मीकुण्ड से उत्तर पिशाचमोचन तीर्थ के पूर्व तट में कपर्दीश्वर के मंदिर गणेश जी हैं।

३: कपर्दीश्वर गणेशाय नमः (म० नं० ए० १३/३९ में हैं, मु० पिशाचमोचन)। पिशाचमोचन से पूर्व अन्नपूर्णा एवं विश्वनाथ जी के दर्शन धर्मकूप में धर्मेश्वर के मंदिर में धर्मेश्वर गणेश जी हैं उन धर्मेश्वर दूसरा नाम गायत्रीश्वर है। धर्मेश्वर के पास में ब्रह्मगायत्री का जप,

२८३

पृ० ८४३

१० ८५८ मेगा ३ - ३/८/७/५८५८

अनुष्ठान एवं पुरश्चरण करने वाले व्यक्ति को दोगुना अधिक फल प्राप्त होता है।

४. धर्मेश्वर गणेशाय नमः (म० नं० डी० २/२१ में हैं, मु० धर्मकूप-मीरघाट)। धर्मेश्वर से उत्तर पशुपति मुहल्ले में पशुपति के मन्दिर में मूर्ति पूर्वाभिमुख है।

५. पशुपतिगणेशाय नमः (म० नं० सी० के० १३/६६ में हैं, मु० पशुपतीश्वर)। पशुपतीश्वर से पूर्व मणिकर्णिका घाट श्मशान के बगल में हैं। शिवप्रसाद पाण्डेजी लिखते हैं, भागीरथीश्वर और गणेश जी सतुवा बाबा के मठ में हैं।

६. भागीरथीश्वर गणेशाय नमः (म० नं० सी० के० ११/११ में हैं, मु० मणिकर्णिका घाट)। मणिकर्णिकाघाट से उत्तर शंकठाघाट के ऊपर हरिश्चन्द्रेश्वर के मंदिर में हरिश्चन्द्र गणेश जी हैं।

७. हरिश्चन्द्रेश्वर गणेशेश्वरायनमः (म० नं० सी० के० ७/१६१ में हैं, मु० संकठाघाट)। संकठाजी के मंदिर में गणेशजी पूर्वाभिमुख हैं, संकठा जी का दूसरा नाम बीफटा देवी है।

८. विकटागणेशाय नमः (मु० संकठाघाट)। संकठाजी से उत्तर विन्दुमाधव मंदिर में विन्दु गणेश जी हैं।

९. विन्दुगणेशाय नमः (म० नं० सी० के० २२/३३ में हैं, मु० पञ्चगङ्गा)। विन्दुमाधव गणेश जी से पश्चिम काल भैरवजी के मंदिर में भैरव गणेश जी हैं।

१०. भैरव गणेशाय नमः (म० नं० के० ३२/२ में हैं, मु० भैरवनाथ-चौखम्बा)। महाराज बड़े गणेशेश्वराय नमः।

११. महाराज बड़े गणेशाय नमः (म० नं० के० ५८/१० में हैं, मु० बड़ा गणेश लोहटिया)। बड़ा गणेश जी से दक्षिण चौक साक्षीविनायक मुहल्ला में होते हुए, साक्षीगणेशजी जो पूर्वाभिमुख हैं।

पृ० ४५८

काशी वैभव दूसरा भाग

कॉपी नं॰ 10

पृ॰ 264